भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १४-२० दिसंबर, 2015 साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	दिसंबर माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	
गुलाबी सूँडी : गुजरात, आंध्रप्रदेश, तेलंगना, महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों से बोलगार्ड II बीटी संकरों पर गुलाबी सूँडी की क्षति तथा जीवित सूँ डियाँ रिकार्ड की गई हैं। सी.आई.सी.आर. की साप्ताहिक परामर्शी में दिए गए प्रबंधन उपायों को तुरंत अपनाएँ तथा इस सूँडी की सतत निगरानी तथा निरीक्षण करते रहें।								
उत्तरी कपास क्षेत्र								
उत्तरी कपास क्षेत्र के अधिकांश भागों में कपास चुनाई का कार्य लगभग पूरा हो चुका है।								
उड़ीसा								
कोरापुट	5	6	4	6	13	0	0	फसल गूलर प्रस्फुटन तथा कपास चुनाई अवस्था में है। प्रातः 10.00 बजे के बाद ही पूरी तरह से खुले हुए गूलरों से कपास चुनें। पौधों पर बचे हुए गूलरों की वृद्धि के लिए फसल पर 1.5% डी.ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का छिड़काव करें। पहली चुनी हुई कपास को अच्छी तरह के सुखाकर ले किन अलग से साफ कपड़े के थैलों में रखें। कपास को संदूषित होने से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें। अंतिम चुनाई के बाद पौधों को उखाड़कर कंपोस्ट बनाने के काम में लाएँ।
कालाहांडी	5	5	4	5	12	0	0	
बोलांगीर	5	0	0	0	8	0	0	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	फसल इस समय गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। काली मृदा वाली फसल में सिंचाई दी जा सकती है। गुलाबी सूँडी के और अधिक नुकसान से हरे गूलरों को बचाने के लिए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल पर एक छिड़काव तुरंत साइपरमेथ्रिन अथवा फेनवलेरेट अथवा लेम्डा-सायहेलोथ्रिन का करें। इस महीने में यह छिड़काव नहीं किया गया तो गुलाबी सूँडी का भारी नुकसान हो सकता है। कीटनाशक-मिश्रणों का अनुप्रयोग कभी न करें। ऐसा करने से सफ़ेद मक्खी का प्रकोप बढ़ सकता है जिसके फलस्वरूप कपास चिपचिपी और काली हो सकती है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल को दिसंबर के अंत तक समाप्त कर दें। फसल को अगले वर्ष 2016 तक खेत में खड़ी न रहने दें। ऐसा करने से गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम होगा तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूँडियों
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	

पाटन	0	0	0	0	0	0	0	में प्रतिरोधकता निर्माण की गति मंद होगी। खेतों की मेंढ़ों पर पिछले वर्ष की कपास की सूखी लकड़ियों के ढेर लगे हुए हैं। कपास के डंठलों , फसल अवशेषों तथा सूँडी से ग्रसित कपास को जमा करके न रखें। फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर कं पोस्ट बनाएँ। घरों अथवा भण्डार में रखी पुरानी कपास अथवा बीज गुलाबी सूँडी के पतंगों का स्रोत बन सकती है। यदि पुराना बीज गुलाबी सूँडी से ग्रसित है तो उसे तुरंत नष्ट कर दें। साफ-सुथरी कपास चुनी जाए तथा उसे साफ कपड़े के थैलों में भण्डारित करने का सुनिश्चित करें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें।
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	कपास की फसल गूलर निर्माण तथा गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। दूसरी तथा तीसरी चुनाई की बीजी ॥ कपास में हरे गूलरों तथा प्रस्फुटित गूलरों में गुलाबी सूँडी का नुकसान दर्ज किया गया है। जैसिड तथा सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि सीमा से ऊपर जबकि चेंपा (एफिड) तथा फूलकीट की संख्या नगण्य पाई गई है। कुछ स्थानों पर लाल पत्ती रोग भी देखा जा रहा है। पहली चुनी हुई कपास को अलग रखें तथा उसे भण्डारित करने से पहले अच्छी तरह से सूखा लें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए इसे जूट के बोरों के स्थान पर कपड़े के थैलों में भण्डारित करें।
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	फसल इस सम य गूलर प्रस्फुटन तथा कपास चुनाई की अवस्था में है। फसल की कुल मिलाकर स्थिति संतोषजनक है। किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल की निगरानी लाल पत्ती रोग के लिए करते रहें तथा जरूरत पड़ने पर बचाव के उपाय करें। कपास के उन बीटी संकरों की खेती किसान भाई अगले वर्ष न करें जिनमें लाल पत्ती रोग अधिक आता है। बाजार में कपास का अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। देर से बोई गई कपास में 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी.ए.पी. का फसल की पुष्पन अवस्था में तथा हरे गूलरों की फसल अवस्था में 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट के छिड़काव के साथ यथासंभव संरक्षित सिंचाई दें। फिरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। यदि ट्रैप में नर पतंगों की पकड़ 8 पतंग/ट्रैप/रात्री सतत तीन रातों तक आने की आर्थिक हानि सीमा पर पहुँचने पर नियंत्रण के उपाय करें। बीजी ।, बीजी ॥ तथा बीटी रहित कपास में विशेषत: गुजरात की सीमा से लगे सीमावर्ती जिलों में तथा उन खेतों में जहाँ पिछले वर्ष फसल मार्च/अप्रैल तक खेत में रखी गई थी , वहाँ हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति की निगरानी भी करते रहें। जब हरे गूलरों में अथवा 20 हरे गूलरों को काट कर देखने पर 20% हरे गूलर क्षतिग्रस्त पाए जाते हैं तो हरे गूलरों में क्षति तुरंत रोकने के लिए किसी एक संश्लेषित पाइरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें। यह भी सुनिश्चित करें कि साफ-सुथरी कपास चुनी जाए तथा इसे सुखाकर साफ-सुथरे कपड़े के थैलों में भण्डारित करें। कपास को
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	

औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग करने से बचें। फसल के डंठल तथा दूसरे अवशेषों और ग्रसित कपास का भण्डारण न करें। फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर कम्पोस्ट बनाएँ। चुनाई का कार्य यथाशीघ्र समाप्त करें तथा फसल को इसी महीने दिसंबर के अंत तक समाप्त कर दें।
तेलंगाना								
आदिलाबाद	3	0	4	0	0	0	0	कपास की फसल इस समय हरे गूलर निर्माण से लेकर कपास चुनाई की अवस्था में है। पहली तथा दूसरी चुनाई का कार्य चल रहा है। सभी रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है। **बारानी काली मृदाएँ** : भारी काली मृदा में फसल वृद्धि सामान्य है। बीजी ।, बीजी ॥ तथा बीटी रहित कपास में हरे गूलरों में क्षति की निगरानी करते रहें, विशेष रूप से उन जिलों में तथा उन खेतों में जहाँ कपास की पिछली फसल मार्च/अप्रैल, 2015 तक खेत में खड़ी थी। हरे गूलरों को (20 की संख्या में) काटने पर इनमें 20% तक गुलाबी सूँडी की क्षति पाए जाने पर फसल में किसी एक सश्लेषित पाइरेथ्राइड का छिड़काव तुरंत करें। इससे हरे गूलरों में आगे बढ़ने वाली क्षति रुकेगी। कपास की पेड़ी फसल तथा ग्रीष्मकालीन कपास की फसल लेने से बचें। अगले वर्ष की फसल में गुलाबी सूँडी के प्रकोप से बचने के लिए खेत से फसल अवशेष को निकाल कर नष्ट कर दें।
वारंगल	0	0	4	3	0	0	3	
खम्मन	0	0	0	3	0	0	4	
कारिंगर	3	0	3	3	0	0	3	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	0	3	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	0	अनंतपुर, करनूल तथा गुंतूर जिलों में दूसरी तथा तीसरी चुनाई के गूलरों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है। फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके तथा प्रति खेत 20 से 50 हरे गूलरों को काटकर गुलाबी सूँडी की संख्या व नुकसान का निरीक्षण करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। यदि ट्रैप में नर पतंगों की पकड़ @ 8 पतंग/ट्रैप/रात्री सतत तीन रातों तक आने पर सिफ़ारिश किए गए उपायों से इसकी रोकथाम करें अथवा खेत में फसल से कहीं से भी 25 हरे गूलरों का प्रति एकड़ नमूना लेकर उन्हें काटकर देखने पर यदि एक सूँडी प्रति 10 हरे गूलर की आर्थिक हानि सीमा पहुँचने पर इसके प्रबंधन के उपाय करें। सिंचाई देकर तथा उर्वरक देकर फसल की अवधि को न बढ़ाएँ क्योंकि देर से बने हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी का भारी प्रकोप होता है। गुलाबी सूँडी की रोकथाम के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि साइपरमेथ्रिन अथवा फेनवलेरेट अथवा लेम्डा-सायहेलोथ्रिन जैसे पाइरेथ्राइड में से किसी एक का फसल पर छिड़काव करें। ऐसा करने से गुलाबी सूँडी का प्रकोप रुक जाएगा अन्यथा दिसंबर में इस सूँडी से हरे गूलरों में भारी क्षति हो सकती है। कीटनाशक-मिश्रणों का अनुप्रयोग कदापि न करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ेगा जिसके फलस्वरूप कपास चिपचिपी हो जाएगी। दिसंबर के अंत तक फसल को किसान भाई समाप्त
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	0	

								कर दें, इसे 2016 तक आगे न बढ़ाएँ। फसल जल्दी समाप्त करने से गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम होगा तथा बीटी कपास के विरुद्ध गूलर की सूँडियों में प्रतिरोधकता निर्माण में कमी आएगी।
कर्नाटक								
धारवाड़	0	0	0	0	0	0	0	कड़ाके की ठंड तथा रस चूषक कीटों के अधिक प्रकोप के कारण बीटी कपास में सभी क्षेत्रों में लाल पत्ती रोग बढ़ रहा है। इसकी रोकथाम के लिए पानी में घुलनशील 1.0% 19:19:19 उर्वरक के साथ मेग्नीशियम सल्फेट 1.0% का फसल पर छिड़काव जारी रखें। दूसरी तथा तीसरी चुनाई की बीजी ॥ कपास में गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है। कुछ खेतों में फसल पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि सीमा से अधिक नोट की गई है। गुलाबी सूँडी तथा सफ़ेद मक्खी के प्रबंधन के लिए इस परामर्शी के परिशिष्ट में दी गई सिफ़ारिशों को अपनाएँ। बाजार में अच्छा भाव लेने के लिए पहले चुनी हुई कपास को अलग से बेचें। प्रत्येक चुनाई के बाद यथासंभव हल्की सिंचाई दें। अगेती फसल में कपास चुनाई का कार्य पूरा हो चुका है। बार-बार सिंचाई करके फलन-बहार लेने से बचें। इसके विकल्प के रूप में दूसरी फसल के रूप में कम अवधि की दलहनी फसल लगाएँ। सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध होने पर दूसरी फसल के रूप में रबी में चना अथवा गेहूँ की फसल ली जा सकती हैं। उखाड़े गए फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर कम्पोस्ट अथवा केंचुआखाद बनाने के काम में लें। कम्पोस्ट बनाने वाले संवर्ध अथवा फसल अवशेष विघटित करने वाले सूक्ष्मजीव- समूह जैसे *फीनोरोचीट, फ्लूओरोटस* तथा *ट्रायकोडर्मा* को कपास के फसल अवशेषों को अपेक्षाकृत जल्दी सड़ाने/ विघटित करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।
हवेरी	6	4	3	4	0	3	3	
मैसूर	9	14	37	9	13	0	5	
तमिलनाडु								
पेरंबलुर	0	0	4	0	0	0	0	बारानी कपास में उत्तर-पूर्वी मानसून से प्राप्त वर्षाजल को संग्रहीत करने के लिए मृदा नमी संरक्षण उपायों को अपनाएँ। खेत से अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी का तुरंत प्रबंध करें। श्रीविल्लीपुत्तुर में शीतकालीन सिंचित कपास उगाई गई है। यहाँ मौसम ठंडा है तथा कभी-कभार वर्षा हो रही है। फसल गूलर परिपक्वावस्था में है। नाशीकीटों का प्रकोप नहीं है। खरपतवारों तथा जड़-गलन का प्रकोप दर्ज किया गया है जिसकी रोकथाम के लिए नियंत्रण उपाय किए जा रहे हैं।
सलेम	3	5	11	3	0	0	0	
त्रिची	14	31	13	0	0	3	0	
विरुडुनगर	14	31	15	5	0	10	6	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	51-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रधान, केकअनुसं, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	विभागाध्यक्ष, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	विभागाध्यक्षा, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूजा	विभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय,(पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय,गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, रीउरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in

डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि विश्वविद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

हिन्दी संसकरण:

उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अधिकारी,
केकअनुसं , नागपुर (महाराष्ट्र)